छोटी गर्दन वाला सफेद गैंडा

बड़े सिर और भारी शरीर वाला सफेद गैंडा, गैंडों की पांच बड़ी प्रजातियों में से एक है और यह कुछ हाथियों की तरह दुनिया के बड़े स्तनपायियों में से एक माना जाता है। लेकिन भारी शरीर के साथ इसकी गर्दन छोटी और छाती चौड़ी होती है। नर सफेद गैंडे का वजन 2300 किलोग्राम होता है। अब तक के सबसे बड़े गैंडे का वजन 4500 किलोग्राम तक रिकॉर्ड किया गया है। इस जानवर में एक खास बात यह है कि इसकी नाक पर दो सींग होते हैं, जो कैरोटिन के बने होते हैं। इस गैंडे में एक खास चीज और होती है, वह है इसके पीठ पर उठा हुआ कूबड़। घास को अच्छी तरह से खाने के लिए इसके पास चौड़ा मुंह होता है। वैसे तो इसके कान सब कुछ सुन लेते हैं, लेकिन यह ज्यादातर समय सूंघकर ही अपना काम चलाता है। इसकी नाक धरती पर पाए जाने वाले सभी जानवरों में सबसे चौड़ी होती है। यह 40 से 50 साल तक जीवित रह सकता है।

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

जानवरों की दुनिया में भी हैं

अच्छे पापा

बच्चों, जैसे तुम्हारे पापा तुम्हारा ध्यान रखते हैं, जरूरतों को पूरा करते हैं और एक कामयाब इंसान बनने में मदद करते हैं, उसी तरह जीव-जंतुओं की दुनिया में भी अच्छे पापा होते हैं, जो बच्चों के सिर्फ रखवाले ही नहीं होते, बल्कि उन्हें जीने के गुर भी सिखाते हैं।

नामाकुआ सैंड ग्रूस

दक्षिण अफ्रीका के कालाहारी रेगिस्तान में पाए जाते हैं ये, जहां बहुत गर्मी होती है और पानी मिलना कठिन होता है। अपने बच्चों को पानी पिलाने के लिए पिता नामाकुआ रोजाना 50 मील का सफर तय करता है। उसके पंख स्पोंज का काम करते हैं। वह अपने पंखों में अपने वजन से ज्यादा करीब 40 मिलीलीटर तक पानी सोख सकता है। सोचो, भारी हुए शरीर से ग्रूस का उड़ान भरना कितना मुश्किल होता होगा। वह तो मीलों दूर उड़ कर वापस लौटता है और अपने बच्चों को पानी पिलाता है। बच्चे उसके पंखों से सीधे पानी पी सकते हैं।

एंपरर पेंगुइन

ये -40 डिग्री फारेनहाइट तापमान वाले अंटार्कटिक महासागर में रहते हैं। ये अकसर समूह में रहते हैं। मां एंपरर पेंगुइन सर्दियों में चार महीने की गर्भावस्था के दौरान समुद्र से करीब 74 मील का सफर तय कर बर्फीले तट पर आती है। सुरक्षित नेस्टिंग साइट ढूंढ़कर अंडा देती है, जिसे वह पिता की देखरेख में छोड़ कर वापस महासागर में भोजन की तलाश में चली जाती है। अंडे सेने की जिम्मेदारी पिता पेंगुइन की होती है। वह यह काम समूह में एक-दूसरे से सट कर करते हैं, जिससे एक तो बर्फीली हवाओं से उनका बचाव हो जाता है और दूसरे शिकारी से बचाव भी हो जाता है। वे खड़े-खड़े अंडे को अपने पैरों के बीच ऊपर रख कर पंख के फ्लैप से करीब 60 दिन तक सेते हैं। इस बीच वे न तो ठीक से सो पाते हैं और न ही कुछ खा पाते हैं। इससे उनका करीब 25 पौंड वजन कम हो जाता है। अंडे से बाहर आने के बाद भी पिता पेंगुइन अपने बच्चे को मां के आने तक फीड कराते हैं। वे उसे अपने गले की घेंघा ग्रंथियों से निकलने वाले प्रोटीनयुक्त दूधनुमा विशेष लिक्विड खिलाते हैं। बच्चा, मां को सौंपने के बाद ही वे भोजन के लिए जा पाते हैं।

विशाल वॉटर बग

कैलिफोर्निया में पाए जाने वाले वॉटर बग भी एक आदर्श पिता हैं। मां वॉटर बग नर की पीठ पर करीब 150 अंडे देती है। इन अंडों को वह एक प्रकार की गोंद से चिपका देती है, जिससे वे पीठ पर सुरक्षित रहते हैं। पिता वॉटर बग तीन सप्ताह तक अंडों को सहेज कर रखते हैं। गोंद उतरने के डर से इस दौरान वह पानी में भी कम जाते हैं। पानी के बाहर सूरज की गर्मी में उन्हें सेंकते रहते हैं। अंडों का आकार बढ़ने पर भी वह अपनी पीठ से नहीं गिराते। अंडों में से बच्चे निकलने के बाद ही पिता वॉटर बग उन्हें लेकर पानी में जाते हैं। तब भी उनकी जिम्मेदारी खत्म नहीं होती। वह उन्हें फीड कराने के साथ जिंदा रहने के तरीके भी सिखाते हैं।

कैटफिश

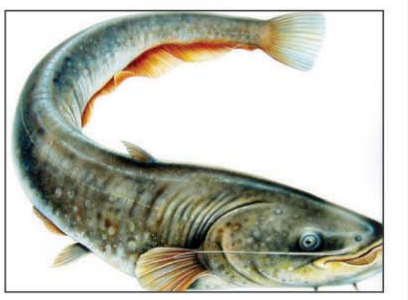

ये मैक्सिको और दक्षिणी फ्लोरिडा की उत्तरी खाड़ी में शीतोष्ण तटों और समुद्री खारे पानी में रहते हैं। पिता कैटफिश तट के पास दरारों में घोंसला बनाते हैं। मां सिर्फ अंडे देती है, उसके बाद पिता अंडों को सेते हैं और पानी बहाव से बचाने के लिए वे उन्हें अपने मुंह में रख लेते हैं। अंडे पिता कैटफिश के मुंह में ही विकसित होते हैं। इन्हें वे कई हफ्तों तक मुंह में रखते हैं, जब तक उनमें से बच्चे न निकल जाएं। अंडों को कोई नुकसान न पहुंचे, इस डर से वे इस दौरान खाना भी नहीं खाते। इससे उनका वजन काफी कम हो जाता है।